K23P 0421

Reg. No. : .....

Name : .....

II Semester M.A. Degree (CBSS – Reg./Supple./Imp.) Examination, April 2023
(2019 Admission Onwards)
HINDI
HIN 2C07 : Modern Hindi Poetry (Upto Nayikavitha)

Time : 3 Hours Max. Marks : 80

I. **निर्देश** : **पांच** प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए । **(5×1=5)**

1) 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन कब हुआ ? और इसके संस्थापक कौन थे ?
2) 'कुकुरमुत्ता' कविता में चित्रित कुकुरमुत्ता और गुलाब किन-किन के प्रतीक हैं ?
3) दिव्वेदी युगीन किन्हीं चार पत्रिकाओं के नाम लिखिए ।
4) नौका विहार कविता में जग का क्रम कैसा है ?
5) कोयल की कूक सुनकर कवि की क्या प्रतिक्रिया थी ?
6) महादेवी वर्मा के किन्हीं चार काव्य संग्रहों के नाम लिखिए।
7) 'अंधेरे में' कविता के रचयिता कौन है ? इस कविता में 'अँधेरा' किसका प्रतीक है ?
8) श्रद्धा ने मनु को क्या करने के लिए प्रेरित किया है ?
9) वीणा का स्वर संगीत राजा ने किस रूप में सुना ?

II. **निर्देश** : किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए । (अधिकतम **150** शब्द) **(3×5=15)**

10) छायावाद की शिल्पगत विशेषताएँ ।
11) कामायनी में अभिव्यक्त दर्शन ।
12) परिवर्तन कविता का मूल संदेश ।
13) श्रीकांत वर्मा के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ ।
14) भारतेंदु युगीन पत्रकारिता ।

III. **निर्देश** : **तीन** प्रश्नों पर निबंध लिखिए । (अधिकतम **300** शब्द) **(3×12=36)**

15) समकालीन कविता के विकास में कुँवर नारायण के योगदान पर विचार कीजिए ।
16) 'अँधेरे में' कविता एक संघर्ष पुरुष की स्वप्न कथा है । इस तथ्य पर विचार-विमर्श कीजिए ।

P.T.O.

17) आधुनिक हिंदी कविताओं पर गाँधी दर्शन के प्रभाव पर प्रकाश डालिए ।
18) आधुनिक संदर्भ में कामायनी के वस्तु-विधान पर विचार कीजिए ।
19) नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए ।

IV. **निर्देश** : **चार** प्रश्नों की समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए । **(4×6=24)**

20) है अमानिशा; उगलता गगन घन अंधकार;
खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन-चार;
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अंबुधि विशाल;
भूधर ज्यों ध्यान-मग्न; केवल जलती मशाल ।

21) मेरे प्यारे नव जलद से कंज से नेत्रवाले
जाके आये न मधुबन से औ न भेजा संदेसा ।
मैं रो-रो के प्रिय विरह से बावली हो रही हूँ
जा के मेरी सब दुख-कथा श्याम को तू सुनी देना ।।

22) ज्यों-ज्यों लगती है नाव पर
उर में लोकित शत विचार ।
इस धारा-सा ही दजग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्गम
शाश्वत है गति, शाश्वत संगम ।।

23) अये. विश्व का स्वर्ण-स्वप्न, संसृति का प्रथम-प्रभात,
कहाँ वह सत्य, वेद-विख्यात ?
दुरित, दुख, दैन्य न थे जब ज्ञात,
अपरिचित जरी-मरण-भ्रू-पात !

24) अब इनमें क्या सारमधुर जब गाती भँवरों की गुंजार;
मर्मर का रोदन कहता है! कितना निष्ठुर है संसार

25) पहेली-सा जीवन है व्यस्त
उसे सुलझाने का अभिमान,
बताता है विस्मृति का मार्ग
चल रहा हूँ बन कर अनजान ।